

साइबेरियन क्रेन, फ्लेमिंगो और ग्रेट व्हाइट पेलकिन

स्रोत: डाउन टू अर्थ

साइबेरियाई सारस और फ्लेमिंगो के साथ-साथ, ग्रेट व्हाइट पेलकिन भी आवास वनाश के कारण भारतीय आर्द्रभूमि से तेज़ी से दूर जा रहे हैं।

- ये पक्षी मुख्य रूप से यूरोप, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में रहते हैं तथा अधिक सर्दियों के दौरान गर्मी के लिये भारत की ओर प्रवास करते हैं।

| प्रजातियाँ | परिचय | संरक्षण स्थिति |
|---------------------|---|---|
| साइबेरियाई क्रेन | <ul style="list-style-type: none"> यह प्रजाति ज़्यादातर पूर्वी एशिया में पाई जाती है, तथा पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों में इनकी संख्या कम है। | IUCN स्थिति: गंभीर संकटग्रस्त (CR) CITES: परशिष्टि I |
| फ्लेमिंगो | <ul style="list-style-type: none"> अपने चमकीले गुलाबी पंखों के लिये जाने जाने वाले फ्लेमिंगो के पैर और गर्दन की लंबाई अधिक होती है। | IUCN स्थिति: संवेदनशील: एंडियन फ्लेमिंगो निकट संकटापन्न: एंडीन फ्लेमिंगो, पुना फ्लेमिंगो, और चिली फ्लेमिंगो सीआईटीईएस: परशिष्टि II |
| ग्रेट व्हाइट पेलकिन | <ul style="list-style-type: none"> वयस्क नर मादा से बड़ा होता है। नर पेलकिन की आँखों के चारों ओर एक गुलाबी धब्बा होता है। | IUCN स्थिति: कम चिंताजनक |

- प्रवासन से संबंधित चुनौतियाँ:
 - आवास का वनाश: आर्द्रभूमि का प्रदूषण और अतिक्रमण उनके प्रवास में बाधा उत्पन्न करता है।
 - जलवायु परिवर्तन: बढ़ते तापमान से उनके शीतकालीन पैटर्न पर असर पड़ता है।
 - एंटीबायोटिक प्रदूषण: खाद्य जाल में एंटीबायोटिक्स का उत्सर्जन भी इन सुंदर सफेद पक्षियों के प्राकृतिक आवासों को बाधित कर रहा है।

और पढ़ें: [आर्द्रभूमि](#)